श्रीभगवद्गीता से एक श्लोक

वह तेज जो आदित्य [सूर्य] में विद्यमान है,

जो अखिल जगत को आलोकित करता है,

जो चन्द्रमा में है और जो अग्नि में है, उस तेज को मेरा ही तेज जानो।

श्रीभगवद्गीता, १५.१२; स्वामी कृपानन्द द्वारा अंग्रेज़ी में भाषान्तरित, *Jnaneshwar's Gita* [साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन, १९९९], पृ २४८।

© २०१९ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।